**ओ३म्**

**“संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार ऋग्वेद विश्व**

**की धरोहर हैः उमेशचन्द कुलश्रेष्ठ”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आज रविवार 24 सितम्बर, 2017 को वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव का समापन हुआ। आज की सभा में श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी एवं आचार्या डा. प्रियंवदा वेदशास्त्री जी के दो महत्वपूर्ण प्रवचन हुए। इस लेख में हम आज श्री उमेश कुलश्रेष्ठ जी का सामयिक, महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित प्रवचन प्रस्तुत कर रहे हैं। अपने व्याख्यान का आरम्भ करते हुए उन्होंने कहा कि आज हम ऋषि दयानन्द जी के देश की एकता को सुदृण करने के सूत्रों पर विचार करेंगे। वह सूत्र क्या थे जिनसे कि राष्ट्र एक सूत्र में बन्ध सकता है? देश की एकता का प्रथम सूत्र है कि जन्मना जातिवाद जो कि भारत देश के लिए कलंक है। ऋषि दयानन्द ने भाग्य की जगह पुरुषार्थ एवं गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार किया। यदि हमारे सभी देशवासी जन्मना जाति का त्याग कर दें तो हमारी एकता में वृद्धि होगी। भारत धनवानों एवं वीरों का देश रहा है। फिर भी हमारा देश गुंलाम हुआ व रहा। देश की गुलामी का प्रमुख कारण भी जातिवाद सहित छुआछूत व ऊंच-नीच आदि का व्यवहार था। देश की एकता का दूसरा सूत्र सभी देशवासियों द्वारा वेद को अपना धर्म व कर्तव्य ग्रन्थ स्वीकार करना है। विद्वान वक्ता ने कहा कि पौराणिक जन और आर्यसमाज के लोग दोनों ही वेदों को अपौरुषेय मानते हैं। सभी मत मतान्तर वेद को स्वीकार कर लेने पर समाप्त हो जायेंगे। मत-मतान्तरों की पुस्तकें, मत प्रर्वतकों के सत्यासत्य मिश्रित उपदेश और गुरुडम की पुस्तकें पढ़कर देश के लोग भ्रमित होते रहते हैं। उन्होंने कहा कि वेद सार्वभौमिक ज्ञान है। श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि वेद को मान लेने पर सारा विश्व एक मत व समान विचारों को हो सकता है। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने लोगों को ‘वेदों की ओर लौटो’ का नारा दिया। इस दिशा में आर्यसमाज ने बहुत काम किया है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने ऋग्वेद को सबसे प्राचीन और विश्व की धरोहर स्वीकार किया है। यदि विश्व के लोग विश्व की इस धरोहर को जानने का प्रयत्न करें तो इससे बहुत लाभ हो सकता है।

देश की एकता का तृतीय सूत्र ऋषि दयानन्द जी के अनुसार राष्ट्र भाषा है जिसका सभी को पोषण करना चाहिये। महर्षि दयानन्द जी का जन्म गुजरात में होने से गुजराती उनकी मातृभाषा थी। संस्कृत भाषा के वह अपने समय के सबसे बड़े विद्वान थे। इस पर भी उन्होंने धर्म की मुख्य भाषा संस्कृत के स्थान पर अपना ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आर्यभाषा हिन्दी में लिखा। अन्य ग्रन्थ भी आर्यभाषा हिन्दी में ही लिखे हैं। बंगाल के ब्रह्म समाज के नेता श्री केशव चन्द्र सेन जी के सुझाव पर ऋषि दयानन्द ने आर्यभाषा हिन्दी को स्वीकार किया था। इससे पूर्व वह संस्कृत में ही वार्तालाप करते थे और व्याख्यान भी संस्कृत में ही देते थे। दयानन्द जी चाहते थे देश में एक ऐसी भाषा हो जिसे सभी देशवासी जाने व उसका अपने व्यवहार व कार्यकलापों में प्रयोग करें। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने अपनी केरल यात्रा का वर्णन किया और बताया कि वहां उनके उपदेश केरल के कन्नड़ भाषियों को समझ में नहीं आते थे, अतः एक दूभाषिये से उनका अनुवाद करवाना पड़ता था। कन्नड़ के लोग कन्नड़ भाषा में ही बोलते थे। इस कारण उनकी भाषा भी आचार्य उमेश जी समझ नहीं पाते थे। आचार्य जी ने कहा कि देश में एक कामन भाषा के न होने के कारण हम आज भी भावनात्मक रूप से परस्पर जुड़ नहीं पाये। देश में भावनात्मक एकता स्थापित करने व उसे मजबूत करने के लिए ऋषि दयानन्द आर्यभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे क्योंकि इस भाषा में देश की राष्ट्रभाषा बनने की शक्ति, योग्यता, स्वभाव, विशेषता व गुण विद्यमान थे व हैं। आचार्य उमेश जी ने संयुंक्त राष्ट्र सभा में भारत की विदेश मंत्री श्री सुषमा स्वराज जी के हिन्दी में दिये भाषण की प्रशंसा की। विदेश मंत्री के हिन्दी में भाषण देने के कारण उसका विश्व की सभी भाषायें जिन्हें यूएन की मान्यता प्राप्त है, उनके हिन्दी भाषण का उन सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया। हम अनुमान कर सकते हैं कि इससे विश्व के प्रायः सभही देशों वा भाषाओं के लोगों व अनुवादकों ने हिन्दी को भी भाषा के रूप में सीखा होगा जबकि भारत में यह मांग उठती रहती है कि हिन्दी को थोपा नहीं जाना चाहिये। हमारा प्रश्न है कि जब विश्व के प्रायः सभी देशों के लोग अनुवाद हेतु हिन्दी सीख सकते हैं तो भारत के अपने लोग हिन्दी क्यों नहीं सीख सकते। इसका विरोध मात्र राजनीतिक कारणों से होता है। हिन्दी के विरोधी देश के शुभचिन्तक व हितकारक नहीं हो सकते।

राष्ट्रीय एकता का चौथा सूत्र **‘नारी शिक्षा’** है। नारी शिक्षा नहीं होगी तो बच्चे शिक्षित व सुसंस्कारित नहीं हो सकते। उन्होंने बताया कि आर्यसमाज ने जालन्धर में पहला स्त्री शिक्षा का विद्यालय खोला था। आरम्भ में पौराणिकों ने इसका विरोध किया परन्तु कुछ समय बाद उन्हें नारी शिक्षा का महत्व पता चल गया और उन्होंने अपने बच्चों को भी इस विद्यालय में पढ़ाया। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द नारी शिक्षा की प्रेरणा न करते तो आचार्या प्रियंवदा जी जैसी विदुषी बहनें हमें न मिलती। आचार्य उमेशचन्द जी ने कहा कि आर्यसमाज के अतिरिक्त विश्व में कोई भी वेदों का पाठ व उसकी शिक्षाओं के अनुसार आचरण और व्यवहार नहीं करता। आचार्य जी ने जनता का आवाह्न किया कि वैदिक विद्वानों और गुरूकुलों को साधन प्रदान करके उनका पोषण करें।

अगला पांचवा एकता का सूत्र **‘एक पूजा पद्धति’** को बतलाकर आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि यदि विश्व में वेदों पर आधारित सर्वांगीण व सर्वाधिक उपयुक्त पूजा पद्धति **‘सन्ध्या व यज्ञ अग्निहोत्र’** बन जायें तो पूरा संसार एकता के सूत्र में बंध सकता है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज की पूजा पद्धति सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम है। पूजा पद्धति के प्रसंग में आचार्य जी ने कहा कि देवताओं की रचना ईश्वर करता है। ईश्वर रचित देवताओं की संगति व सम्यक उपयोग से सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है। आचार्य कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि मनुष्य रचित देवता वा मूर्तियां देवता नहीं है। ईश्वर प्रेरित यज्ञ पर्यावरण एवं मनुष्य के अन्तःकरण को शुद्ध करते हैं। कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि हम पौराणिक परिवारों से निकल कर आये हैं। आर्यसमाजी बन कर हमने दोनों पद्धतियों को छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि अधिकांश आयसमाजी आर्य विधि से नित्य दोनों समय सन्ध्या व यज्ञ नहीं करते हैं। बहुत से लोग स्वयं व अतिथियों को भोजन भी होटलों में कराते हैं। आज का आर्यसमाजी किस बात का आर्यसमाजी है? उन्होंने कहा कि सन्ध्या व हवन न करने वाला आर्यसमाजी नहीं हो सकता। उन्होंने यह भी रहस्योद्घाटन किया कि हमारे आर्यसमाज के पुरोहित इस बात को स्वीकार करते हैं कि हमारी रोजी रोटी पौराणिक लोगों की दक्षिणाओं से चलती है। आर्यसमाज का पुरोहित शुद्ध मन्त्रोच्चार करता है इसलिए पौराणिक आर्य पुरोहितों को बुलाते हैं और अच्छी दक्षिणा देते हैं। दूसरी ओर आर्यसमाजी को जब यज्ञ करना हो तो स्वयं यज्ञ कर लेते हैं, पुरोहित की आवश्यकता अपवाद स्वरूप ही होती है।

आचार्य उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थों व कार्यों में राष्ट्रीय एकता के जो उपर्युक्त सूत्र दिए हैं वह एकता के सर्वोत्तम सूत्र हैं। आचार्य जी ने असली आर्य बनने का आह्वान किया। उन्होंने परिवारजनों के साथ मिलकर सन्ध्या व यज्ञ करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि स्वाध्याय भी सन्ध्या का भाग है। उसे भी सभी आर्यजनों को नियमित रूप से करना चाहिये। ऐसा करने पर बच्चों पर अच्छे संस्कार पड़ेगे। आचार्य जी का समय पूरा हो चुका था, अतः संकेत होते ही उन्होंने अपने व्याख्यान को विराम दे दिया।

आज वैदिक साधन आश्रम तपोवन के शरदुत्सव के समापन अवसर पर अनेक भजनोपदेशकों व छात्र-छात्राओं ने भजन व गीत प्रस्तुत किये। अनेक विद्वानों के प्रवचन व अन्य प्रस्तुतियां भी हुई। अनेक लोगों का सम्मान व अभिनन्दन किया गया। मंत्री जी द्वारा अनेक सूचनायें दी गई। अनेक योजनाओं की जानकारियां भी इस अवसर पर दी गइंर्। इतर बातों का वर्णन हम पृथक लेख में करेंगे। बहुत से लोगों ने कम व अधिक अपनी सामर्थ्य व सोच के अनुसार दान भी किया। शरदुत्सव सोल्लास एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। देश के अनेक भागों से ऋषि भक्त इस उत्सव में सम्मिलित हुए। निवास एवं भोजन की आश्रम परिसर में उत्तर व्यवस्था की गई थी। 23 व 24 सितम्बर, 2017 को दिन भर वर्षा के कारण लोगों को कुछ कठिनाईयां अवश्य हुईं और बाह्य वातावरण में यज्ञ पर भी इसका आंशिक प्रभाव पड़ा। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में आयोजित 23-9-2017 के कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण’**

**“तपोवन आश्रम में ‘भजन-सन्ध्या’ की भव्य एवं प्रभावशाली प्रस्तुति”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 वैदिक साधन आश्रम तपोवन के शरदुत्सव का चौथे दिन का कार्यक्रम आश्रम से दूर 3 किमी. की दूरी पर पर्वतों में घने साल के ऊंचे ऊंचे वृक्षों के बीच स्थित तपोस्थली आश्रम में आयोजित किया गया जहां आश्रम की एक भव्य एवं विशाल नई यज्ञशाला है और सभागार आदि अन्य भवन भी है। आश्रम से प्रातः 6.30 बजे आश्रम द्वारा उपलब्ध कराई बसों से यात्री आयोजन स्थल पर पहुंचे और वहां 5 कुण्डीय यज्ञशाला एवं सभागार में सन्ध्या एवं ऋग्वेद के मंत्रों से किया जा रहा यज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ के बाद यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या प्रियंवदा वेदभारती जी का प्रवचन हुआ। आचार्या जी ने प्रवचन में बताया कि स्वधा अन्न को कहते हैं। परिश्रम व धर्मपूर्वक प्राप्त किया गया अन्न स्वधा होता है। उन्होंने कहा कि स्वधा से आच्छादित होने की प्रार्थना वेदों में है। विदुषी आचार्या जी ने कहा कि परिश्रम से प्राप्त किया अन्न शरीर को लगता है। आचार्या जी ने श्रद्धा, यज्ञ, दीक्षा और मुमुक्षत्व की विस्तार से चर्चा भी अपने उपदेश में की। समस्त चर्चा को विस्तारभय से हम यहां नहीं दे पा रहे हैं। आचार्या जी के बाद कार्यक्रम के संचालक श्री शैलेश मुनि जी ने कुछ आवश्यक एवं उपयोगी बातें उपदेशात्मक शैली में कहीं। यज्ञ की समाप्ति पर सब यजमानों को आशीर्वाद की प्रक्रिया भी सम्पन्न की गई। इसके बाद जलपान हेतु कार्यक्रम को आधे घंण्टे के लिए विराम दिया गया।

 10.15 बजे से सत्संग पुनः आरम्भ हुआ। पहला भजन भजनोपदेशक श्री रमेश चन्द्र स्नेही जी ने प्रस्तुत किया। इसके बोल थे ‘करता रहूं गुणगान मुझे दो ऐसा वरदान। तेरा नाम ही जपते जपते इस तन से निकले प्राण, इस तन से निकले प्राण।।’ इस भजन के बाद आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी का सम्बोधन हुआ। शर्मा जी ने सन् 1947 में महात्मा आनन्द स्वामी और प्रभु आश्रित जी की प्रेरणा एवं बावा गुरमुख सिंह, अमृतसर द्वारा प्रदत्त साधनों की सहायता से स्थापित आश्रम का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करने के साथ भावी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आश्रम की कुल भूमि 594 बीघा है जिसमें दो आश्रम एवं गोशाला भी सम्मिलित है। दोनों आश्रमों में समय समय पर चलने वाले कार्यक्रमों, जिसमें होली के पूर्व स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी द्वारा कराया जाने वाला चतुर्वेद पारायण यज्ञ भी सम्मिलित है, ऐसे सभी कार्यक्रमों से भी श्री शर्मा जी ने धर्मप्रेमी श्रोताओं को अवगत कराया। श्री शर्मा के सम्बोधन से प्रेरित होकर श्री अशोक कुमार भाटिया जी ने आश्रम को अपनी सेवायें देने का प्रस्ताव किया। श्री शैलेश मुनि ने इस अवसर पर कुछ माह पूर्व चकराता आर्यसमाज के उत्सव व वहां के अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार की भावी योजनाओं से श्रोताओं को अवगत कराया। आश्रम को प्रमुख दानी श्री रामभज दत्त जी ने एक लाख रूपये दान का एक चैक मंत्री जी को दिया। इसस पूर्व भी वह दो किश्तों में 70 लाख रूपया दे चुके हैं। उनकी धनराशि से आश्रम में आरोग्यधाम बन रहा है जिसका कार्य लगभग पूर्णता पर है और अनेक चिकित्सीय सुविधायें आरम्भ भी हो गई हैं।

 आर्यजगत् के विख्यात गीतकार और भजनोपदेशक सतपाल पथिक जी ने आयोजन में एक भजन प्रस्तुत किया। भजन के बोल थे **‘तेरी खातिर परम पिता ने यह संसार बनाया, कुल दुनिया का वैभव सारा तेरे नाम लगाया।।‘** इसके बाद आगरा से पधारे आर्य विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का उपदेश हुआ जिसमें उन्होंने धन के सदुपयोग व समाज के कार्यों में दान देने की महत्ता को अनेक उदाहरणों से स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि इस जन्म में सुपात्रों को दिया गया दान अगले जन्म में मनुष्य के जन्म सहित अनेक भौतिक सुख सुविधाओं के रूप में हमें प्राप्त होता है। इसके बाद आर्य भजनोपदेशक श्री रूहेल सिंह जी का एक भजन हुआ जिसके बोल थे **‘जो कोई जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पाये। कीकर कैर लगाने वाला आम कहां से खाये।।’** इस भजन के बाद प्राकृतिक चिकित्सक डा. विनोद कुमार शर्मा का स्वास्थ्य विषय पर प्रभावशाली सम्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने देश में बढ़ रहे फास्ट फूड आदि के सेवन के दुष्परिणामों से अवगत कराया। उन्होंने महिलाओं व युवाओं में बढ़ रही फैशन की प्रवृत्ति का चित्रण कर उस पर भी अपना दुःख जताया। दिन के सत्संग का समापनयज्ञ की ब्रह्मा आचार्या प्रियंवदा वेदभारती जी के दान की महिना पर प्रवचन से हुआ। उन्होंने कहा कि दान की महिमा अपरम्पार है। इसके बाद आश्रम के यशस्वी प्रधान श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी ने सभी आगन्तुकों का भूरिश: धन्यवाद ज्ञापित किया। शान्तिपाठ के साथ दिन के इस सत्संग का समापन हुआ। इसके बाद दिन के 3.30 बजे से यज्ञ आरम्भ हुआ। वर्षा के कारण व्यवधान रहा। यज्ञ पांच कुण्डों में न करके एक मुख्य वेदी पर ही किया जा सका। यज्ञ के बाद पथिक जी ने यज्ञ प्रार्थना गाकर कराई। उन्होंने एक भजन भी प्रस्तुत किया। इसके बाद आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ एवं आचार्य प्रियंवदा जी के प्रवचन हुए। सन्ध्या करने के बाद यह दूसरा सत्र भी समाप्त हुआ।

 आज रात्रि भजन सन्ध्या का आयोजन प्रस्तावित था जो सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भजन सन्ध्या का कार्यक्रम 8.00 बजे से आरम्भ हुआ। पहला भजन श्री आजाद सिंह आजाद जी ने प्रस्तुत किया। भजन के बोल थे **‘ऋषिवर ने जब वेदों का सूरज चमकाया।’** इसके बाद भजनोपदेशक श्री रमेश चन्द्र स्नेही जी का भजन हुआ। इसके बोल थे **‘वह कौन आया रोशन हो गई महफिल जिसके नाम से’।** तीसरी प्रस्तुति आर्य भजनोपदेशक श्री रूहेल सिंह जी की थी। उनके भजन के बोल थे **‘दयानन्द तुम्हारी दास्तां जहां गाता रहे - जब तक जमीं रहेगी और आसमां रहेगा।’** गुरूकुल पौंधा, देहरादून के अनेक ब्रह्मचारी आश्रम के उत्सव में सेवा देने आये हुए हैं। एक ब्रह्मचारी प्रभांश ने महाराणा प्रताप के वीरतापूर्ण कार्यों पर अपनी कवितामय प्रस्तुति दी। गुरूकुल के ही एक अन्य ब्रह्मचचारी भरत ने भी अपनी कविता प्रस्तुत की जो अत्यधिक प्रभावशाली थी। मंच पर दानी श्री रामभज दत्त, श्रीमती मीनाक्षी पंवार, ब्र. निकेता आदि का माला व शाल ओढ़ा कर अभिनन्दन किया गया। प्रसिद्ध गायिक मीनाक्षी पंवार जी ने कई गीत प्रस्तुत किये। पहला स्वलिखित गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘नभ में जल में और धरती पर प्रभु तेरा ही आधार मिले। जब जब जिस रूप में जन्म मिले बस तेरा ही मुझे प्यार मिले।।’** मीनाक्षी जी की दूसरी प्रस्तुति थी **‘तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा लेकर आई हूं पिला दो प्रेम का अमृत पिपासा ले कर आई हूं।।’** आपकी तीसरी प्रस्तुति पथिक जी का एक प्रसिद्ध भजन था जिसके बोल थे **‘भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे। वैदिक धर्म की खातिर मिटना इन्हें सीखा दे।।’** मीनाक्षी जी की अन्तिम व चौथी प्रस्तुति थी एक भजन जिसके शब्द थे **‘परम पिता परमेश्वर तुने अद्भुद ये संसार रचा। स्वयं विधाता निराकार तूने जग कैसे साकार रचा।।’** इसके बाद कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की छात्रा ने कुछ भजन प्रस्तुत किये। मीनाक्षी जी की तरह उनकी सभी प्रस्तुतियां उत्तम कोटि की थी। उनके द्वारा प्रस्तुत गीतों के कुछ शब्द यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

भजन 1 - अगर तू कहीं है तो सूरत दिखा दे ये मन्दिर व मस्जिद के झगड़े मिटा दे।

भजन 2 - मानव तू अगर चाहे दुनिया को हरा देगा। बस ईश्वर के दर पर सिर अपना झुका देना।।

भजन 3 - पहचान न पाया मैं तुमको पहचान न पाया मैं तुमको, वन उपवन में नगर डगर में भटकता रहा मैं ....

इससे पूर्व कन्या गुरूकुल की चार छात्राओं ने एक सामूहिक गीत भी प्रस्तुत किया जिसके प्रथम बोल थे **‘दयानन्दमय हम जीवन विमल अपना बना लेवे।’**

भजन सन्ध्या के अध्यक्ष पं. सतपाल पथिक जी ने सभी प्रस्तुतियां की गुणवत्ता की सराहना की। सबको अपनी शुभकामनायें एवं आशीर्वाद दिया। उन्होंने पूना प्रवचन के आधार पर ऋषि द्वारा प्रस्तुत साम-गान का भी उल्लेख कर उस पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द का सामगान सुन कर लोग इस कदर उसमें खो गये थे, बेसुध हो गये थे कि उसके समाप्त होने के बहुत देर बाद वह अपनी सामान्य स्थिति में लौट सके। इसे पूरे प्रकरण को हम बाद में पृथक से प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। पंथिक जी से एक भजन का भी अनुरोध किया गया था। इसके अनुसरण में उन्होंने **‘जो जिन्दगी पुरूषार्थ के सांचे में ढली है। तूफान का मुख मोड़ दे यह वो बली है।।’** इसके बाद शान्ति पाठ हुआ और रात्रि 10.15 बजे **‘भजन सन्ध्या’**का समापन हो गया। इति ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**